

**नौकरी की किताब**  
**सत्र 27: नौकरी की पुस्तक का धर्मशास्त्र**  
**जॉन वाल्टन द्वारा**

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 27 है, नौकरी की पुस्तक का धर्मशास्त्र।

**परिचय [00:22-00:48]**

अब हम अय्यूब की पुस्तक के धर्मशास्त्र को विकसित करने का प्रयास करने के लिए तैयार हैं। हमने इसके उद्देश्य और इसके संदेश के बारे में बात की है। हमने इस बारे में बात की है कि पुस्तक में ईश्वर का वर्णन कैसे किया गया है, और वे सभी महत्वपूर्ण तत्व हैं, लेकिन आइए धर्मशास्त्र को एक साथ जोड़ने का प्रयास करें। जिन तरीकों से हम इस तक पहुंच सकते हैं उनमें से एक है ईश्वर के बारे में अय्यूब के झूठे विचारों से सीखने का प्रयास करना।

**भगवान क्षुद्र नहीं है [00:48-3:09]**

तो, आइए इस विचार से शुरुआत करें कि ईश्वर क्षुद्र है। फिर, अय्यूब यही सोचता था कि परमेश्वर छोटा है। अय्यूब न केवल इस संभावना के संबंध में संदिग्ध है कि वह भगवान के पुरस्कारों के प्रति अत्यधिक चौकस है, बल्कि वह भगवान के फैसले के प्रति भी अत्यधिक चौकस है। हम इसे अध्याय सात में पाते हैं, हम इसे अध्याय 14 में पाते हैं।

यह विचार कि अय्यूब परमेश्वर के न्याय के विचार को बहुत, बहुत गहराई से महसूस कर रहा है, और यह आज भी काफी विशिष्ट है। लोग कभी-कभी यह सोचने में अभ्यस्त हो जाते हैं कि ईश्वर अति-सतर्क है, चाहे वह पुरस्कार हो या निर्णय। किसी पीड़ित व्यक्ति के लिए यह कहना असामान्य नहीं है कि वह मुझसे क्या चाहता है? मैंने वह सब कुछ किया है जो उसने कहा था! और इस विचार के साथ कि ईश्वर किसी तरह हमारी कल्पना से भी अधिक कठोर होने वाला है। लोग आश्चर्य करने लगते हैं कि क्या भगवान एक दशक पहले हुई किसी छोटी-मोटी गलती या किसी चूक पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं और क्या भगवान ने अभी भी उसे कस कर पकड़ रखा है और उसे जाने नहीं दे

रहे हैं। हमें वास्तव में ईश्वर के बारे में सोचने के उन तरीकों से सावधान रहना होगा। हम अति-सतर्क नहीं होना चाहते या यह नहीं सोचना चाहते कि ईश्वर इन चीज़ों के प्रति अति-सक्षम है। हमने मत्ती 5:48 में कहा है कि ईश्वर पूर्ण है, और वह चाहता है कि हम पूर्ण बनें जैसे वह पूर्ण है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह निर्दयतापूर्वक हमसे छोटी-छोटी गलतियों का हिसाब मांगता है। वहां बात बिल्कुल भी ऐसी नहीं है। पवित्रशास्त्र हमें आश्चर्य करता है कि वह हमारी कमज़ोरियों को जानता है, और उसे एहसास होता है कि हम कमज़ोर हैं; उदाहरण के लिए, भजन 103 में। इसलिए, हमें यह पहचानना होगा कि ईश्वर के बारे में अय्यूब की चिंताएँ छोटी हैं और हम भी उसी तरह चिंतित हो सकते हैं। सचमुच, हमें ईश्वर के बारे में उस तरह के दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करना होगा।

### **ईश्वर अन्यायी नहीं है [3:09-8:02]**

एक और दृष्टिकोण जो हम अय्यूब में पाते हैं वह यह है कि अय्यूब वास्तव में ईश्वर को अन्यायी मानता है। अय्यूब का यह दावा कि परमेश्वर के कार्यों से लाभ नहीं उठाया जा सकता, उसकी प्रारंभिक पुष्टियों के केंद्र में हैं, 1:21, 2:10। लेकिन वह वास्तव में अय्यूब के लिए केवल एक अस्थायी पद है। वह अंततः अपने तरीकों के न्याय के लिए भगवान को बुलाने की कोशिश करता है। याद रखें, वह अदालत में सुनवाई की मांग करता है। वह ईश्वर पर अपमानजनक शक्ति का आरोप लगाता है। यदि यह न्याय का मामला है तो इसमें एक सूक्ष्म परिवर्तन है कि कौन उसे चुनौती दे सकता है - वह अय्यूब 9:19 है; वह निर्दोष और दुष्ट दोनों को नष्ट कर देता है। यह अय्यूब 9:22 में केवल तीन पद बाद का है। 19:7 में, अय्यूब का दावा है कि कोई *मिशपैट नहीं है*। *मिशपत* न्याय के लिए हिब्रू शब्द है। और 27:2 में, वह दावा करता है कि परमेश्वर ने उससे *मिशपत रोक लिया है*। हम इसे 34:5 में भी देख सकते हैं। तो, यह विचार यह है कि ईश्वर उस पर खरा नहीं उतर रहा है जिसकी उससे उचित अपेक्षा की जानी चाहिए।

अध्याय 16, छंद 9 से 14 में, वह भगवान के खिलाफ एक हमलावर, एक प्रतिद्वंद्वी, एक विश्वासघाती और बिना किसी दया वाले योद्धा के रूप में अपने आरोपों को पंक्तिबद्ध करता है। अध्याय 40:8 में अय्यूब को परमेश्वर की फटकार यह स्पष्ट करती है कि अय्यूब ने परमेश्वर को अन्यायी माना है।

फिर, यह अक्सर हमारी आधुनिक प्रतिक्रियाओं की विशेषता है जब जीवन उस तरह नहीं चलता जैसा हम सोचते हैं कि उसे चलना चाहिए। जब हम दुनिया भर में ऐसी चीजें देखते हैं जो वास्तव में हमें परेशान करती हैं, तो हमारे लिए यह सोचना शुरू कर देना स्वाभाविक है कि भगवान किसी तरह उन मानकों से कम हो रहे हैं जो उन्हें रखने चाहिए। लेकिन अगर हम जीवन में आने वाली हर परिस्थिति में न्याय की उम्मीद करते हैं, तो हम अनिवार्य रूप से निराश होंगे। और, हमारी हताशा में, वह निराशा ईश्वर को अपने ध्यान में ले जा सकती है। समस्या यह है कि हम भी इस आधार को स्वीकार करने लगे हैं कि यदि न्याय ईश्वर से आता है और वह सर्वशक्तिमान है, तो हमें दिन-ब-दिन अपने अनुभव से ईश्वर के न्याय को प्रतिबिंबित करने की अपेक्षा करनी चाहिए। हम आसानी से ऐसा सोचते हैं। इस सोच में दोष यह है कि यह मानता है कि ब्रह्मांड ईश्वर के गुणों से अंकित है। यह खारिज की गई किताबों का एक दृश्य है।

गलती यह सोचना है कि न्याय सुनिश्चित करने के लिए भगवान की योजना दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। हम यह सोचने की गलती करते हैं कि यह ईश्वर की योजना है। वह बस यही नहीं कर रहा है। जब हमारे जीवन में न्याय कार्यान्वित नहीं होता है, तो यह निष्कर्ष निकालना आसान होता है कि ईश्वर निर्णय ले रहा है, लेकिन न्याय उन निर्णयों को संचालित नहीं कर रहा है। यदि वह न्याय के बिना शक्ति का प्रयोग कर रहा है, तो वह उस अराजक प्राणी की तरह बन जाता है जैसा अय्यूब ने उसे चित्रित किया है।

ऐसे में, वह ऑर्डर नहीं ला रहा है। वह व्यवस्था का स्रोत नहीं है। इसके बजाय, वह गैर-आदेश का प्रतिनिधित्व करता है। इस दुनिया में जहां व्यवस्था, गैर-व्यवस्था और अव्यवस्था तीनों मौजूद हैं, वहां न्याय का राज नहीं हो सकता। तो, याद रखें, हमने जो विकल्प सुझाया है वह यह है कि भगवान का डिज़ाइन उनकी बुद्धि का प्रतिबिंब है। वह व्यवस्था का स्रोत और केंद्र है, लेकिन न तो गैर-व्यवस्था और न ही अव्यवस्था उसके नियंत्रण से बाहर है। ईश्वर का मूल्यांकन किसी बाहरी मानक के अनुसार नहीं किया जा सकता, क्योंकि इससे वह उस मानक पर निर्भर हो जाएगा। हमारा स्थान भगवान को जवाबदेह ठहराने का नहीं है। उसे जवाबदेही के लिए बुलाना नहीं है क्योंकि ऐसा करने से अंततः ईश्वर को ईश्वर से कमतर माना जाएगा।

## ईश्वर से छेड़छाड़ नहीं की जा सकती [8:02-11:00]

अय्यूब यह भी दिखाता है कि उसका मानना है कि ईश्वर के साथ छेड़छाड़ की जा सकती है। अय्यूब ईश्वर को इतना हाशिए पर रखता है कि उसे बरगलाया जा सकता है। अय्यूब ने परमेश्वर को उलझाने, उसे अदालत में खींचने की कोशिश की थी, और वह असफल रहा। तो, फिर वह उसका उपयोग करता है। यह अध्याय 31 में निर्दोषता की प्रतिज्ञा है। अय्यूब को अब इस बात पर विश्वास नहीं है कि उसे ईश्वर से न्याय मिलेगा। अब वह समाज में संतुलन स्थापित करके किसी प्रकार की सुसंगतता चाहता है। उसकी बेगुनाही की शपथ यही करने का प्रयास करती है। वह उन सभी अपराधों को गिनाता है जो उसने नहीं किए हैं, मूल रूप से भगवान को आमंत्रित करता है कि यदि वह वास्तव में उन अपराधों में से किसी का दोषी है तो उसे मार डाला जाए और भगवान की चुप्पी बनी रहती है। परमेश्वर की चुप्पी ने अय्यूब के विरुद्ध काम किया था, और अय्यूब उसे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश करता है। वह उन्हें कार्रवाई करने के लिए बाध्य करके ईश्वर का हाथ थामने का इरादा रखता है या ईश्वर की चुप्पी में, अय्यूब को दोषसिद्धि मिलेगी। परमेश्वर की चुप्पी में, उसने चुपचाप, निष्क्रिय रूप से अय्यूब को दोषमुक्त कर दिया होता। यदि ईश्वर द्वारा अय्यूब की प्रारंभिक बर्बादी अनुचित साबित होती है, तो ईश्वर को अपनी नीतियों में असंगत देखा जाएगा। यदि प्रतिशोध सिद्धांत उसकी नीतियों को परिभाषित करता है तो अय्यूब की प्रतिष्ठा बच जाएगी जबकि भगवान की प्रतिष्ठा जब्त हो जाएगी। अय्यूब 1, श्लोक 4 से 5 में, हमने इसके बारे में बहुत बात की है; अय्यूब के व्यवहार से पता चलता है कि उसका मानना है कि ईश्वर को प्रबंधित किया जा सकता है। वह इस बात पर विश्वास करने के लिए आगे बढ़ गया है कि ईश्वर को अनुष्ठानिक तरीकों से मात दी जा सकती है। खतरा यह है कि हमें यह विश्वास हो सकता है कि ईश्वर अपनी अपेक्षाओं के प्रति अति-सतर्क हो सकता है। अय्यूब को आश्चर्य होता है कि क्या ईश्वर उदासीन, हिंसक, व्यस्त या शायद अयोग्य भी है। आज हमारे लिए यह विश्वास करना बहुत आसान है कि ईश्वर को हेरफेर किया जा सकता है, चाहे हमारे दान के माध्यम से, हमारी चर्च उपस्थिति, हमारी पूजा, या ईसाई अनुशासनों के हमारे प्रदर्शन के माध्यम से, कि किसी तरह, हम ईश्वर को वह करने के लिए हेरफेर कर सकते हैं जो हम चाहते हैं कि वह करे। यह सोचने का लाभ-उन्मुख

तरीका है, और हम ऐसा नहीं कर सकते। हमें इसे अपने अंदर बर्दाश्त नहीं करना चाहिए.

### **निष्कर्ष [11:00-11:56]**

इसलिए, अय्यूब की किताब से हमें जो बहुत सारा धर्मशास्त्र मिलता है, वह तब मिलता है जब हम ईश्वर के बारे में सोचने में अय्यूब की त्रुटियों को पहचानते हैं, अपने आप में उन्हीं झुकावों को पहचानते हैं, और फिर किताब से निकलने वाला एक अच्छा धर्मशास्त्र हमें उन गलतफहमियों को दूर करने में मदद कर सकता है। भगवान और सुनिश्चित करें कि वे हमारे सोचने के तरीकों को चित्रित न करें।

पुस्तक का धर्मशास्त्र, निस्संदेह, ईश्वर की तस्वीर से परे, पीड़ा की तस्वीर तक जाता है। और हम अगले खंड में अपना ध्यान अय्यूब की पुस्तक में पीड़ा के धर्मशास्त्र की ओर लगाएंगे।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 27 है, नौकरी की पुस्तक का धर्मशास्त्र। [11:56]